



सतत वन प्रबंधन के लिए हितलाभ आधारित कार्य प्रणाली
नवीन उन्नत वन मूल्य श्रृंखला

फॉरेस्ट-प्लस 2.0 औचित्य और अपेक्षाएं



उन्नत सतत क्षेत्र-परिदृश्य प्रबंधन तकनीकों का उपयोग करते हुए वन आधारित उत्पाद और सेवाओं में वृद्धि के माध्यम से महत्वाकांक्षी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारत की सहायता करना।



वनों में निवेश को आकर्षित करने तथा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बढ़ाने के लिए वन आधारित मूल्य श्रृंखला एवं प्रोत्साहन तंत्र विकसित करना



वन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं (पारिस्थितिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक) के मूल्यों की समझ में विस्तार करना



समन्वित, कुशल और एकीकृत वन परिदृश्य प्रबंधन के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देना



वन परिदृश्य नियोजन, क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण के लिए एक नवीन तकनीकों तथा अभिनव साधनों को अपनाना



रिकॉर्ड में दर्ज वन क्षेत्रों के भीतर और बाहर की जमीन के लिए नगो-मेथी कार्यकारी और प्रबंधन योजनाओं की तैयारी में सहायता करना

फॉरेस्ट-प्लस 2.0 कार्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

श्री रोहित तिवारी
वन महानिरीक्षक
वन नीति प्रभाग,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन, जोरबाग रोड,
नई दिल्ली-110003, भारत

वेबसाइट: www.moef.gov.in
ईमेल: wb094.ifs@nic.in

श्री वर्गीज पॉल
वरिष्ठ वानिकी सलाहकार
यू.एस. एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवेलपमेंट
अमेरिकी दूतावास, शांतिपथ, चाणक्यपुरी,
नई दिल्ली-110021,
भारत

वेबसाइट: www.usaid.gov/india
ईमेल: vpaul@usaid.gov

डॉ. उज्ज्वल प्रधान
पार्टी के प्रमुख,
फॉरेस्ट-प्लस 2.0
तीसरी मंजिल, 37, लिंक रोड,
लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024,
भारत

वेबसाइट: www.forestplus.org
ईमेल: ujjwal.pradhan@forestplus.org

फॉरेस्ट-प्लस 2.0 जल एवं समृद्धि के लिए वन

भारत में वन प्रबंधन का सशक्तिकरण

संदर्भ

लगभग 33 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ भारत दुनिया का सातवां बड़ा देश है। इस विशाल क्षेत्र में विद्यमान भौगोलिक विविधता में सम्मिलित चार प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं (हिमालय, पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट एवं अरावली) विविध प्रकार की वातावरणीय परिस्थितियों (300 से लेकर 3000 मिलीमीटर वर्षण प्रतिवर्ष) के साथ मिलकर हमें एक विलक्षण पारिस्थितिक विविधता प्रदान करती हैं। विविधताओं से परिपूर्ण यह पारिस्थितिकी तंत्र, जिसमें 16 भिन्न प्रकार के वन समूह हैं, 91,000 से अधिक जीव-जन्तु और 45,000 वनस्पति प्रजातियों को समर्थन देता है, भारत को उन सत्रह "विशाल-विविध देशों" में शामिल करता है, जिनमें पृथ्वी की 60-70 प्रतिशत जैव विविधता पायी जाती है।

पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं एवं वनों का महत्व

भारतीय वन लोगों को अनेकों लाभ प्रदान करते हैं। लगभग 30 करोड़ की आबादी अपने जीवनयापन और आजीविका कमाने के लिए वन व पारिस्थितिक उत्पादों तथा सेवाओं जैसे इमारती लकड़ी एवं अन्य इमारती लकड़ी उत्पाद, अकाष्ठ वनोत्पाद, स्वच्छ पानी और हवा, पर्यावरण नियमन, भू-स्थिरीकरण, मनोरंजन, आध्यात्मिक मूल्यों आदि के लिए वनों पर निर्भर हैं। वन भारत की प्राकृतिक धरोहर "बैंक अकाउंट" हैं, जो अपने आसपास के समुदाय और एक बड़े समाज को सदियों से आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते आ रहे हैं। वर्ष 2013 में गठित एक विशेषज्ञ पैनल के अनुमान के अनुसार भारत के वनों का वर्तमान शुद्ध मूल्य 1.7 ट्रिलियन डॉलर है।

पानी एक ऐसी महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र सेवा है जो हमें वनों से मिलती है। आज, जबकि दुनिया की 16 प्रतिशत आबादी और 18 प्रतिशत पशुधन की जल आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत में

विश्व का केवल 4 प्रतिशत पानी ही उपलब्ध है, यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्ष 2016 में भारत की 400 नदियों में से 290 में कराये गये एक विश्लेषण में पाया गया है कि इनमें से 70 प्रतिशत की स्थिति चिंताजनक है। इनकी जलधारा निरन्तर घट रही है, उपनदियां समाप्त हो रही हैं अथवा कट गयी हैं, अत्यधिक प्रदूषण है, नदियों के किनारों पर अतिक्रमण हो रही है और इनके जलग्रहण क्षेत्रों के वनों को काट दिया गया है। निरन्तर बढ़ रही जल संकट की स्थिति ने जल संभरण हेतु वनों के महत्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है क्योंकि नदियों की एक बड़ी संख्या वनाच्छादित क्षेत्रों से निकलती और वनों के द्वारा ही संपोषित है।



फॉरेस्ट-प्लस 2.0 की भूमिका

भारत की बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक उन्नति के लिए जरूरतमंद वन उत्पाद और सेवा में कमी हो रही है। इसका कारण है भूमि क्षेत्र (जिसका वन एक भाग है) पर पड़ रहा दबाव। इसलिए आज पारिस्थितिकी सेवाओं, विशेष रूप से पानी, तथा समग्र भू-क्षेत्र प्रबंधन एवं संवर्धन हेतु नियोजन तथा निर्णय-समर्थन उपायों के माध्यम से समन्वित प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (यूएसएआईडी) (USAID) और भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा दिसंबर 2018 में शुरू किये गये पांच वर्षीय कार्यक्रम, "फॉरेस्ट-प्लस 2.0 : जल एवं समृद्धि के लिए वन" के तहत वन भूमि क्षेत्र प्रबंधन के लिए पारिस्थितिकीय सोच प्रदर्शित की जायेगी, जिससे वनों की पारिस्थितिकीय और सामाजिक-आर्थिक संपोषणीयता में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रत्येक भूक्षेत्र में वन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं को गहराई से समझने में सहायता मिलेगी।

कार्यक्रम निम्नलिखित पर केन्द्रित होगा :

बहुआयामी सेवाओं के लिए वनों के प्रवन्धन हेतु उपकरणों का विकास

- वन जलसंभरण क्षेत्रों के प्रबंधन में सहायता करना ताकि उनके जल प्रवाह तथा गुणवत्ता में वृद्धि हो और इसके फलस्वरूप वनाश्रित समुदायों की आजीविका अवसरों में सुधार और उनकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़े।
- स्थापित पारिस्थितिकी सोच के साथ आदर्श वन प्रबंधन योजनाओं (कार्यकारी योजना और भू-क्षेत्र प्रबंधन योजना) को विकसित करना।
- नवोन्मेषी ऐप्स और उपकरणों की मदद से वन योजना प्रक्रियाओं का स्वचालीकरण।

वित्त उपलब्धता बढ़ाने के लिए हितलाभ आधारित उपाय

- पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं की बेहतर अनुश्रवण और मूल्यांकन के लिए उपकरण विकसित करना।
- इन सेवाओं के दक्ष प्रदाय के लिए हितलाभ आधारित कार्य प्रणाली का प्रदर्शन। जैसे कोई नगरपालिका या उद्योग ऊपरी क्षेत्र में रहने वाले वन-समुदाय को उनके द्वारा सुधारित वन-प्रबंधन के फलस्वरूप निचले क्षेत्र में आने वाले पानी के उपयोग के लिए भुगतान करे।

संरक्षण के साथ आर्थिक अवसरों को खोलना

- वनों पर निर्भर लोगों के लिए व्यावहारिक उद्यम (निर्वाह योग्य आजीविका के बजाय) तैयार करने और स्थापित करने पर ध्यान केन्द्रित करना और प्राइवेट सेक्टर से निवेश को प्रोत्साहित करना।



यह ज्ञान उन तंत्रों और उपायों के विकास और उसे संस्थागत बनाने में मदद करेगा, जो कि इन सेवाओं के सतत प्रबंधन एवं संपोषणीयता तथा समावेशी आर्थिक प्रगति के बीच संतुलन स्थापित करते हैं।

'फॉरेस्ट-प्लस 2.0' यूएसएआईडी (USAID) के पूर्ववर्ती कार्यक्रम पार्टनरशिप फॉर लैंड यूज़ साइंस (फॉरेस्ट-प्लस) की सफलता से प्रेरित है, जिसे 2012 से 2017 के बीच संचालित किया गया था। 'फॉरेस्ट-प्लस 2.0' कार्यक्रम को लक्षित क्षेत्रों में वन विभाग, शैक्षणिक व शोध संस्थानों, प्राइवेट सेक्टर की इकाइयों और वन-आधारित समुदायों के मध्य परस्पर समन्वय एवं निकट सहयोग को जारी रखते हुए संचालित किया जायेगा।

कार्यक्रम के लक्ष्य हैं:

- 1,200,000 हेक्टेअर भूमि का सुधारित प्रबंधन
- पारिस्थितिकी सेवाओं के लिए भूमिक्षेत्र प्रबंधन में तीन हितलाभ कार्यप्रणाली का प्रदर्शन
- 12 मिलियन डॉलर की समावेशी आर्थिक गतिविधियों का संचालन
- 800,000 परिवारों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ

फॉरेस्ट-प्लस 2.0 भूमि-क्षेत्र

गया, बिहार:

गया प्रमंडल बिहार के दक्षिण में, झारखंड से सटा हुआ है और यह एक महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थ है। इस प्रमंडल में गया और जहानाबाद जिले सम्मिलित हैं। प्राकृतिक वन आवरण, उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती, विरल है। गौतम बुद्ध वन्यजीव अभयारण्य इस प्रमंडल का हिस्सा है। जंगलों में उपलब्ध अकाष्ठ वन उत्पादों में तेंदू, बेल, महुआ, आंवला और चिरौजी सम्मिलित हैं। छोटा नागपुर क्षेत्र से निकलने वाली कई नदियाँ जैसे फाल्गू, मोरहर, डाढर, पैमार आदि गया से होकर बहती हैं। यह क्षेत्र घनी आबादी वाला है, जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि है।

तिरुवनंतपुरम, केरल:

तिरुवनंतपुरम भू-क्षेत्र केरल राज्य के दक्षिणी सिरे पर स्थित है, जिसमें दो वन प्रभाग क्रमशः तिरुवनंतपुरम भौमिक (IAR) तथा तिरुवनंतपुरम वन्यजीव (IWL) सम्मिलित हैं।

तिरुवनंतपुरम में अधिकांशतः उष्णकटिबंधीय सदाबहार और अर्ध-सदाबहार प्रकार के जंगल हैं और यह पश्चिमी घाट का हिस्सा है, जिसमें बहुत अधिक स्थानिकता और असाधारण रूप से उच्च जैव विविधता है। भू-क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता के एक संकेतक के रूप में, लुप्तप्राय प्रजातियों सहित सिंहमुख बंदर (Lion-tailed macaque), नीलगिरि तहर और नीलगिरि लंगूर यहां मौजूद हैं। भू-क्षेत्र में तीन नदियाँ, नेय्यर, करमना और वामनपुरम हैं।

मेडक, तेलंगाना:

मेडक वन प्रभाग में मेडक जिला सम्मिलित है, जो कि तेलंगाना के मध्य-पश्चिम भाग में अवस्थित है। इस प्रभाग में पाया जाने वाला वन प्रकार उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती है। प्रभाग का एक हिस्सा जैव विविधता से समृद्ध पोखराम वन्यजीव अभयारण्य में आता है। अकाष्ठ वन आधारित नीम, आंवला, सीताफल और कुछ औषधीय प्रजातियों के साथ ही उच्च मूल्य वाली वृक्ष प्रजातियाँ जैसे सागौन, महुआ और डलबर्जिया यहां के वनों में पायी जाती हैं। मंजीरा और उसकी सहायक नदियाँ से निर्मित होने वाले महत्वपूर्ण जल संभरण क्षेत्र के फलस्वरूप यहाँ के वन संसाधनों के आधार को संश्रय प्राप्त होता है।

